International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(1): 141-143

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(1): 141-143
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 18-11-2019
Accepted: 22-12-2019

राधा देवी
शोधच्छात्रा, दयानन्द वैदिक अध्ययन पीठ, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, पंजाब, भारत।

Corresponding Author:
राधा देवी
शोधच्छात्रा, दयानन्द वैदिक अध्ययन पीठ, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, पंजाब, भारत।

ईशावास्योपनिषद् और सम्पूर्ण अवतार बाणी के सन्दर्भ में ब्रह्म की सर्वव्यापकता

राधा देवी

प्रस्तावना

वेद, भारतवर्ष की ऐसी अमूल्य निधि है जिसकी प्रसिद्धि विश्वभर में व्याप्त है। अक्षय ज्ञान के भण्डार ये वेद निखिल विश्व में अप्रतिम है। विद् ज्ञाने धातु से 'हलश्च' सूत्र से 'धञ्' प्रत्यय करने पर निष्पन्न वेद पद का व्युत्पत्ति लभ्य अर्थ है–ज्ञान। वैदिक साहित्य चतुर्धा विभक्त है–संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद्।

चतुर्थ भाग के रूप में विकसित गहन दार्शनिक अवधारणा से संवलित उपनिषद् है। उपनिषद् शब्द 'उप' तथा 'नि' उपसर्गपूर्वक 'सद्' धातु से क्विप् प्रत्यय जोड़ने पर निष्पन्न हुआ। सद् धातु के तीन अर्थ है–विशरण–नाश होना, गति–प्राप्ति होना, अवसाद–शिथिल करना।

उपनिषद् का अर्थ है अध्यात्म विद्या। जिस विद्या के अध्ययन से संसार बीजभूत विद्या नष्ट होता है, ब्रह्म की प्राप्ति होती है, जन्म–मरण रूपी दुःख का शिथिलीकरण होता है वही अध्यात्मिक विद्या उपनिषद् है।

प्रत्येक वेद के उपनिषद् पृथक्–पृथक् है। इशावास्योपनिषद् शुक्ल यजुर्वेद का चालीसवां अध्याय है। इसके 18 मंत्रों में ईश्वर की सर्वव्यापकता, त्यागपूर्वक भोग, निष्काम कर्म योग, विद्या–अविद्या, सम्भूति–असम्भूति अनेक विषयों का वर्णन है। यहां ब्रह्म की सर्वव्यापकता का संक्षिप्त वर्णन करने की कोशिश की जा रही है।

निरंकारी मिशन एक विचारधारा है मानव को वास्तविक मानव बनाने की व उसके परम लक्ष्य (ब्रह्म प्राप्ति) को प्राप्त कराने की। 'सम्पूर्ण अवतार बाणी' निरंकारी मिशन का ग्रन्थ है जिसमें 376 शब्दों में ब्रह्म का स्वरूप, ब्रह्म की सर्वव्यापकता, सद्गुरु, भक्त, पाप–पुण्य, मुक्ति अनेक विषयों का वर्णन है। यहाँ ब्रह्म की सर्वव्यापकता को विषय के रूप में लिया गया है।

ईशावास्योपनिषद् में ब्रह्म की सर्वव्यापकता

ईशावास्योपनिषद् का प्रारम्भ ही ''ईशा वास्यम्'' पद से हो रहा है जिसका अर्थ है 'ईश्वर से व्याप्त है।' उपनिषद् के प्रारम्भ में ही ईश्वर की सर्वव्यापकता के दर्शन हो रहे है। जितना भी चर–अचर, जड़–चेतन जगत् दिखाई दे रहा है वह सब ईश्वर अर्थात् ब्रह्म से व्याप्त है।

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।[1]

इस ब्रह्माण्ड में जो कुछ भी है वह ब्रह्म से व्याप्त है। सब कुछ ब्रह्म से परिपूर्ण है, ब्रह्म से रहित अर्थात् ब्रह्म के बिना कुछ भी नहीं। 'खलक बिन खाली नहीं सूई धरन को ठौर'। एक सूई की नोंक को रखकर कह दें कि यहाँ ब्रह्म नहीं–ऐसा नहीं क्योंकि ''ईशावास्यमिदं सर्वम्।''

एक अन्य मन्त्र में ब्रह्म की सर्वव्यापकता को स्पष्ट किया जा रहा है

अनेजदेकं मनसो जवीयो नैनद्देवा आप्नुवन् पूर्वमर्षत्
तद्धावतोऽन्यानत्येति तिष्ठत्तस्मिन्नपो मातरिश्वा दधाति।[2]

अनेजत्'– जो अचल है अर्थात् स्थिर है, अडोल है, जिसमें हलचल नहीं है। 'एकम्' –एक है, ब्रह्म जो एक है और गतिहीन है। आगे कहा मनसो जवीयः–मन से तीव्र गतियुक्त। पहले कहा अनेजत् फिर कहा जवीयः कुछ विरोध सा नजर आ रहा है। लेकिन यह विरोध नहीं, बल्कि ब्रह्म की सर्वव्यापकता है। अनेजत् का अर्थ है– ये विचलित नहीं होता, सदैव ठहरा हुआ स्थिर एकरस है। मनसो जवीयः का अर्थ है– मन की गति को सबसे अधिक तेज माना गया है कि एक पल में न जाने कहा होता है, मन से भी तीव्र का अर्थ है– मन को कहीं भी जाने के लिए कुछ समय तो लगता है लेकिन ब्रह्म पहले से

ही वहां उपस्थित होता है इसलिए मन की तरह गति नहीं करनी। फिर इसी मन्त्र में और भी विशद व्याख्या कर दी–तद्धावतोऽन्यानत्येति तिष्ठत्– अन्यान् धावतः –दूसरे दौड़ने वालों को (तिष्ठत् स्वयं स्थित रहते हुए अतिक्रमण कर जाता है। अर्थ वही है कि हर जगह पहले से ही परिपूर्ण है, उपस्थित है, पहुंचा हुआ है।

तदेजति तन्नैजति तद् दूरे तद्वन्तिके
तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः[3]
''तदेजति'' वह चलता है अर्थात् गतिशील है,

''तन्नैजति'' वह नहीं चलता अर्थात् स्थिर है फिर से विरोधभास, अर्थ वही है स्थिर होते हुए भी सब जगह उपस्थित है इसलिए गतिशील नजर आता है। यदि इसके साकार–निराकार रूप की बात करें तो निराकार रूप में स्थिर है, साकार रूप में गतिशील है जो कुछ भी जड़–चेतन है वह सब साकार रूप और गतिशील है और इन सबमें ब्रह्म व्याप्त है यह सबसे पहले मन्त्र में कह दिया गया।
''तद् दूरे तद् उ अन्तिके'' दूर भी है नजदीक भी है,
अब फिर विरोधाभास। दूर और समीप होना ब्रह्म की सर्वव्यापकता है। सर्वव्यापक सत्ता होने के कारण दूर और समीप है क्योंकि जो सर्वव्यापक है वह केवल एक सीमा तक ही सीमित नहीं है, न केवल जहां तक नजर देख रही है, वही तक सीमित है। जहा तक नज़र देख रही है, वहां तो ये ब्रह्म है ही जहां नज़र नहीं जा रही वहां भी है। किसी शहर में एक व्यक्ति खड़ा है तो जहां वह खड़ा है वहां तो वह शहर के समीप है किन्तु शहर तो बड़ा है तो शहर के बाकी हिस्से उस व्यक्ति से दूर है इसी प्रकार ब्रह्म समीप भी है और दूर भी, सर्वत्र समायी हुई सत्ता है। सभी के अन्दर भी है और सभी के बाहर भी। फिर से ब्रह्म की सर्वव्यापकता दिखाई गई है। सबमें ब्रह्म है और सभी ब्रह्म में है।

सम्पूर्ण अवतार बाणी में ब्रह्म की सर्वव्यापकता

हर कण, हर घट, हर ज़र्रे में ब्रह्म व्यापक है
हर ज़र्रे विच सूरत तेरी हर पत्ते ते तेरा नां
ऐधर ओधर चार चुफुरे तेरी सूरत तकदा हां [4]
हर कण मे इसी ब्रह्म की सूरत है, हर पते पर
इसी का नाम चारो तरफ ये ब्रह्म ही व्याप्त है।
'जिधर देखता हू उधर तू ही तू है
कि हर शै में जलवा तेरा हू–बू–हू है।
आगे लिख दिया–''चन्दन में खुशबू ब्रह्म है,
गंगा में निर्मलता ब्रह्म है, सूरज में तेज ब्रह्म है और चन्द्रमा में शीतलता ब्रह्म है''[5]
सभी में ये ब्रह्म व्यापक है। इसकी सर्वव्यापकता को स्पष्ट करते हुए आगे कहा गया–
एह सच्चा है इक्को सच्चा
घट घट रमया जो निंरकार[6]
घट–घट रमया अर्थात् प्रत्येक शरीर में विराजमान, उपस्थित है, बसा हुआ है वही बात जो ईशावास्यमिदं सर्वम् में कही गई।
भरपूर खलावां अन्दर वेखो
पसरी बैठे जो दातार [7]

यह ब्रह्म सब ओर फैला हुआ है। सब जगह इसी का पसारा है। इसका कहीं आरम्भ नहीं होता न ही अन्त होता है, अनादि तथा अनन्त है।

निरंकार है एहो इक्को
जिसदा कोई आकार नहीं[8]

इस ब्रह्म का कोई आकर नहीं अर्थात् निराकार है। आकार नहीं होने का अर्थ जहा निराकार है वहीं यह भी अर्थ है जो आकार वाला है वह सीमित होता है, उसकी सीमा होती है लेकिन जिसका आकार नहीं है वह असीम है। यदि ब्रह्म को आकार में बाँध दिया जाए तो वह ससीम हो जाएगा जबकि ब्रह्म असीम है, अपार है, अनन्त है।
''निरंकार है एहो इक्को'' अर्थात् ये ब्रह्म एक ही है कोई दो–चार, बीस–पचास नहीं है। ऐसा आकार रहित सर्वत्र व्यापक परमात्मा एक है।

निरंकार एह जल थल महियल
कण–कण अंदर वस रिहै[9]

जल में, स्थल में, कण–कण में सभी जगह ब्रह्म बसा हुआ है। कोई भी ऐसा स्थान नहीं जहाँ यह ब्रह्म नहीं है। जहाँ की भी बात करोगे इसी परम सत्ता को पाओगे जैसे ईशावास्योपनिषद् में लिखा है तद्धावतोऽन्यानत्येति तिष्ठत्।
आगे फिर इसकी सर्वव्यापकता का वर्णन करते हुए लिख दिया–

किवें भला कोई मिण सकदा ए
अनमिणते नूं विच मिणती दे[10]

जिसका कोई माप नहीं, परिमाण नहीं, उसको मापने का सामर्थ्य किस का हो सकता है अर्थात् कोई भी इसको माप नहीं सकता। जिसको मापा नहीं जा सकता, जो अथाह है, विस्तृत है, व्यापक है।

निरंकार प्रभू नूं जेकर समझो
हर थां हाज़र–नाज़र ए

अब फिर कह दिया गया यदि निरंकार को समझना है तो इसकी हर स्थान पर उपस्थिति को समझना है। अगर इसकी हर कण में उपस्थिति को नहीं समझा तो इस ब्रह्म को वास्तव में जाना ही नहीं गया। इसकी सर्वव्यापकता को बताते हुए आगे कह दिया गया–

साहिब मेरा सर्वव्यापी कुझ न इसतों खाली ए
पत्ता पत्ता टोल मारयै खोजा डाली डाली ए।[12]

पत्ते में, डाली में, हर जगह यह समाया हुआ है। कोई भी स्थान इससे खाली नहीं है। गुरुवाणी में एक स्थान पर लिखा।

जिमी जमान के बिखै समस्त एक जोति है
न घाट है न बाढ है न घाट बाढ होत है

ऐसा ब्रह्म जो पूर्ण रूप से समाया हुआ है, कम–ज्यादा नहीं हुआ करता।
उपसंहार रूप में इतना ही कि यह ब्रह्म जो सर्वव्यापक है, अनन्त है, अथाह है, अनिर्वचनीय, अचिन्तनीय है। 'ईशावास्योपनिषद्' तथा 'सम्पूर्ण अवतार बाणी' में अनेक प्रकार से ब्रह्म की सर्वव्यापकता को दर्शाया गया है।

संदर्भ

1. ईशावास्योपनिषद् – 1
2. वही – 4
3. वही – 5
4. सम्पूर्ण अवतार बाणी–शब्द–2/1–2
5. वही – शब्द–2/3–4
6. वही – शब्द–3/8
7. वही – शब्द–11/1
8. वही – शब्द–12/1

9. वही – शब्द–13/6
10. वही – शब्द–17/4
11. वही – शब्द–189/1
12. वही – शब्द–307/1–2